विदाई भाषण

श्री एम. वेंकैया नायडू

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति और भारतीय वैश्विक परिषद् - आईसीडब्ल्यूए के अध्यक्ष

द्वारा

'बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत-अफ्रीका साझेदारी: प्राथमिकताएं, संभावनाएं और चुनौतियां" विषय पर आईसीडब्ल्यूए के राष्ट्रीय सम्मेलन में विदाई भाषण

4 सितंबर 2019

सप्रू हाउस, नई दिल्ली

मुझे बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत-अफ्रीका संबंधों पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र पर यहां सप्रू हाउस में आने की बहुत खुशी है।

भारत की विदेश नीति में अफ्रीका को उच्च प्राथमिकता दी गई है। प्रधानमंत्री मोदी ने 25 जुलाई 2018 को युगांडा की अपनी यात्रा के दौरान 10 व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांतों में हमारी अफ्रीका नीति को स्पष्ट करते हुए, कहा था "हम अफ्रीका के साथ अपने जुड़ाव को और मजबूत और गहरा करना जारी रखेंगे ... यह प्रक्रिया निरंतर और नियमित रूप से जारी रहेगी।".

कुछ ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं जिन्हें भारत और अफ्रीका के बीच संबंधों के परिप्रेक्ष्य में उच्च प्राथमिकता के रूप में रेखांकित किया गया है।

इस बात को लेकर हमारा दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारी विकास साझेदारी अफ्रीका को लेकर तय की गई प्राथमिकताओं और एजेंडे द्वारा निर्देशित रहेगी। यह सब उन शर्तों पर होगा जो अफ्रीका के लिए सुविधाजनक होंगे; जो अफ्रीका की क्षमताओं के अनुरुप होंगे और उसके भविष्य में किसी तरह की बाधा उन्त्पन्न नहीं करेंगे।

डिजिटल क्रांति के अपने बड़े अनुभव के साथ भारत निश्चित रूप से अफ्रीका के विकास ; सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में सुधार; शिक्षा और स्वास्थ्य के विस्तार; डिजिटल साक्षरता के प्रसार; वित्तीय समावेशन के विस्तार; और वंचितों को मुख्यधारा में लाने में मदद करेगा।

भारत कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए भी अफ्रीका के साथ काम करेगा क्योंकि अफ्रीका के पास दुनिया की 60 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि होने के बावजूद वह वैश्विक कृषि उत्पादन में सिर्फ 10 प्रतिशत का ही योगदान कर पाता है।

भारत और अफ्रीका ने एक साथ उपनिवेशवाद का मुकाबला किया है। दोनों ने उपनिवेशवाद से जुड़े शोषण और उसके बाद आए विनाश का अनुभव किया है। इसलिए भारत एक न्यायसंगत, प्रतिनिधित्व वाली और लोकतांत्रिक वैश्विक व्यवस्था के लिए मिलकर काम करेगा जिसमें अफ्रीका और भारत में रहने वाली दुनिया की एक तिहाई आबादी की आवाज सुनी जा सके।

जैसे-जैसे भारत अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को और गहन और तेज करता जा रहा है वैसे वैसे भारत-अफ्रीकी संबंधों और अफ्रीकी मामलों पर भारतीय दृष्टिकोण की बेहतर समझ को बढ़ावा देने की आवश्यकता भी महत्वपूर्ण बनती जा रही है।

भारत ने अपनी ओर से अफ्रीकी देशों के साथ जुड़ाव को मजबूत करने और उसमें विविधता लाने के लिए टीम 9 पहल, फोकस अफ्रीका कार्यक्रम और भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन प्रक्रिया जैसे नीतिगत हस्तक्षेपों की एक श्रृंखला शुरू की है।

इसलिए यह राष्ट्रीय सम्मेलन बहुत सामयिक और प्रासंगिक है।

मुझे खुशी है कि आईसीडब्ल्यूए ने भारत-अफ्रीका संबंधों से संबंधित मुद्दों पर व्यापक स्तर पर चर्चा और बहस करने के लिए इस सम्मेलन में समूचे भारत से अफ्रीका पर अध्ययन करने वाले विद्वानों, विशेषज्ञों, विश्लेषकों को एक साथ लाने का प्रयास किया है।

यह वास्तव में उल्लेखनीय है कि सम्मेलन ने भारत-अफ्रीका संबंध, शासन और भू-राजनीति, आर्थिक और विकास सहयोग में पांच सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में संभावनाओं की खोज करने का प्रयास किया है।

प्रवासी संबंध, साझा सुरक्षा चुनौतियां, मीडिया, संस्कृति और शिक्षा का आदान-प्रदान तथा भारत में अफ्रीकी अध्ययन को बढ़ावा देना।

मुझे विशेष रूप से इस बात की खुशी है कि यह सम्मेलन हमारे राष्ट्रपिता की 150वीं जयंती के असवर पर हो रहा है। हमारे देश की जनता की नजर में अफ्रीका, महात्मा की पहली कर्मभूमि है। समानता और न्याय के लिए उनके शुरुआती संघर्षों ने भारत और अफ्रीका के बीच पुराने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को मजबूत करने में बहुत योगदान दिया है।

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि पिछले दो दिनों में सम्मेलन में भारत-अफ्रीका संबंधों के विभिन्न आयामों, हमारे व्यापक संबंधों को आगे बढ़ाने के तरीकों और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत में अफ्रीकी अध्ययन को बढ़ावा देने के तरीकों ,तथा एक दूसरे को समझने के लिए भारत और अफ्रीका के बीच जो कमियां रह गई हैं उन्हें पाटने के लिए बहुत उपयोगी चर्चा हुई।

भारत और अफ्रीका हमेशा से ही सभ्यता, संस्कृति और प्रगति के मामले में स्वाभाविक भागीदार रहे हैं। यह संबंध मित्रता की लंबी परंपराओं, सभ्यतागत संपर्कों, ऐतिहासिक सद्भावना, साझा अनुभवों, विश्वदृष्टि और पारस्परिक हितों से बना है।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति और अध्यक्ष आईसीडब्ल्यूए समापन भाषण देते हुए।

अफ्रीका के देशों के साथ भारत के मजबूत ऐतिहासिक संबंध हैं। इस क्षेत्र के देश उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष की विरासत साझा करते हैं। अफ्रीका के समर्थन ने भारत, यूगोस्लाविया और मिस्र द्वारा शुरू किए गए गुटनिरपेक्ष आंदोलन को विकासशील दुनिया की एक शक्तिशाली आवाज बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई। शीत युद्ध के दिनों में बनी एकजुटता और एकता की भावना भारत-अफ्रीका संबंधों को आज भी आगे बढ़ाने का काम कर रही है।

पिछले एक दशक में हमने देखा है कि कैसे संबंधित क्षेत्रों और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में आए मूलभूत परिवर्तनों के साथ दोनों देशों के संबंधों ने एक नया रूप लिया है।

जैसा कि आर्थिक सर्वेक्षण-2019 में उल्लिखित है भारत एक बड़ी आर्थिक और वैश्विक ताकत के रूप में उभर है जो 2024-25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा रखता है। इसके साथ ही जनवरी 2015 में अपनाये गए एजेंडे-2063 के अनुसार अफ्रीका की तीव्र आर्थिक वृद्धि और अपना भाग्य संवारने की उसकी इच्छा ऐसे कारक हैं, जो समकालीन संबंधों को आकार दे रहे हैं।

अफ्रीका का एजेंडा 2063 आज अपनी उन सात आकांक्षाओं को पूरा करना चाहता है जो साझा समृद्धि और कल्याण, एकता और एकीकरण , स्वतंत्र नागरिकों और विस्तारित क्षितिज के लिए

उसकी इच्छाओं को दर्शाता है, जहां महिलाओं और युवाओं की पूरी क्षमता का एहसास हो सके और जहां भय, बीमारी और असीमित इच्छाओं से मुक्त वातावरण हो।

अफ्रीका की प्राथमिकताएं और उसकी अपनी सात आकांक्षाओं के प्रति प्रतिबद्धताएं अफ्रीका के साथ भारत के जुड़ाव के 10 व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुरूप हैं।

आज अफ्रीका वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण विकास इंजन बनने की ओर अग्रसर है। यह एक ऐसा महाद्वीप है जो अपने बढ़ते आर्थिक विकास और शिक्षा मानकों ; लोकतंत्र की चाहत ; क्षेत्रीय एकीकरण के प्रयास, संघर्ष को कम करने और सुरक्षा खतरों को दूर करने के अथक प्रयास; प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता और सबसे तेजी से बढ़ती युवा आबादी और मानव पूंजी के साथ अपार संभावानओं वाला क्षेत्र है।

हाल के वर्षों में अफ्रीका के साथ हमारे जुड़ाव ने जीवंतता और गतिशीलता हासिल कर ली है। कई मंत्रिस्तरीय और 32 उच्च स्तरीय यात्राओं के माध्यम से अफ्रीका के साथ हमारे राजनीतिक जुड़ाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इसके अलावा हम 2015 में आयोजित तीसरे भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन के बाद से अफ्रीका के 36 से अधिक नेताओं की मेजबानी कर चुके हैं।

भारत अपनी राजनयिक पहुंच बढ़ाने के लिए अफ्रीका में 18 अतिरिक्त मिशनों में से 6 पहले ही खोल चुका है। आने वाले वर्षों में इस पर और ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

अफ्रीका हमारे लिए एक महत्वपूर्ण व्यापार और निवेश भागीदार बन गया है। 2017 - 2018 में हमारा द्विपक्षीय व्यापार 62.66 अरब अमेरिकी डॉलर था और अफ्रीका में कुल निवेश 54 अरब अमेरिकी डॉलर था, जिससे भारत अफ्रीका में चौथा सबसे बड़ा निवेशक बन गया। हालाँकि, अभी भी वहां अपार संभावनाएं बनी हुई हैं।

हम महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र समझौते (एएफसीएफटीए) पर हस्ताक्षर करने की सोच रहे हैं। यह अफ्रीका को दुनिया का सबसे बड़ा मुक्त व्यापार क्षेत्र बना देगा, जो अफ्रीका के साथ व्यापार और आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने का एक और अवसर होगा।

विकास साझेदारी का हमारा मॉडल परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से पारस्परिक लाभ चाहता है और अफ्रीकी देशों की जरूरतों और प्राथमिकताओं के प्रति उत्तरदायी है।

इस दिशा में, आईटीईसी के तहत क्षमता निर्माण और मानव संसाधन विकास, ऋण सहायता और अनुदान सहायता सहित हमारी विकास पहलों ने भारत को अपने सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में अफ्रीका का एक करीबी भागीदार बना दिया है।

यह वास्तव में उल्लेखनीय है कि भारत ने 42 अफ्रीकी देशों को कुल 11 बिलियन अमेरिकी डॉलर के 189 एलओसी प्रदान किए हैं, जो आयात निर्यात बैंक के माध्यम से भारत द्वारा दी जाने वाली एलओसी की कुल राशि का 42 प्रतिशत है।

भारतीय एलओसी के तहत कार्यान्वित की जा रही परियोजनाओं ने हमारे विकास सहयोग का विस्तार किया है जिसमें बिजली उत्पादन और वितरण, पानी से संबंधित परियोजनाओं, रेलवे, चीनी संयंत्रों, बुनियादी ढांचे, कृषि, सिंचाई और सूचना संचार और प्रौद्योगिकी सहित कई क्षेत्र शामिल हैं।

चूंकि विकास सुरक्षा के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, इसलिए शांति और सुरक्षा बनाए रखना हमारे संबंधों में एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया है। पिछले कुछ वर्षों में हमने अफ्रीका के कई देशों के साथ अपने सुरक्षा और रक्षा सहयोग को गहरा किया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार, आतंकवाद का मुकाबला, शांति स्थापना और साइबर सुरक्षा जैसे मुद्दों में हमारे समान हित हैं।

हमारे 10 मार्गदर्शक सिद्धांतों में प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट किया है कि “हम आतंकवाद और उग्रवाद का मुकाबला करने; हमारे साइबरस्पेस को सुरक्षित रखने; और शांति को आगे और बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्र का समर्थन करने में अपने सहयोग और आपसी क्षमताओं को मजबूत करेंगे"।

हिंद महासागर, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है जो दुनिया के कुल महासागर क्षेत्र का 20 प्रतिशत है। पिछले दो दशकों से यह विशेष रूप से समुद्री डकैती के रूप में गंभीर समुद्री सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये चुनौती पूर्ण समस्याएं तेजी से अपना स्वरूप बदलने के साथ साथ अलग अलग न्यायिक अधिकार वाले क्षेत्रों से भी जुड़ी हैं।

परिणामस्वरूप उनका मुकाबला करने के लिए हिंद महासागर के किनारे बसे भारत, अफ्रीका और अन्य देशों की ओर से संयुक्त प्रयासों और एकीकृत प्रतिक्रिया की आवश्यकता है जो इसे समुद्री सुरक्षा सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी और कौशल विकास जैसे अन्य क्षेत्रों में हमारा सहयोग लगातार बढ़ रहा है और हमारी साझेदारी का विस्तार डिजिटल प्रौद्योगिकी, नीली अर्थव्यवस्था और जलवायु परिवर्तन सहित नई सीमाओं तक भी हुआ है।

आज की एकीकृत विदेश नीति के क्षेत्र में अफ्रीका हमारे रडार के केंद्र में है और बना भी रहना चाहिए।

चाहे हम विशाल पश्चिमी हिंद महासागर को उसके सभी प्रभावों के साथ देखें या अफ्रीकी महाद्वीप के पूर्वी तट के साथ भारत के सभ्यतागत संपर्कों को देखें या वास्तव में किसी अन्य तरीके देखें , अंत में यही निष्कर्ष निकलता है।

ऐसे में जबकि अफ्रीका से जुड़े हमारे हितों की व्यावहारिक तत्वों को नकारा नहीं जा सकता है साथ में यह भी जरूरी है कि इस विदेश नीति को बनाए रखा जाना चाहिए और इसे एक बौद्धिक वातावरण द्वारा उचित दिशा दी जानी चाहिए।

दूसरे शब्दों में, अफ्रीका में हमारे नीतिगत लक्ष्य और उद्देश्य तब तक सार्थक नहीं हो सकते जब तक कि हमें अफ्रीका के बारे में पर्याप्त ज्ञान और विशेषज्ञता न हो।

इन संदर्भों में भारत में अफ्रीकी अध्ययन और भारत-अफ्रीकी बौद्धिक समझ को बढ़ावा देना अतिरिक्त महत्व रखता है।

इसलिए मैं चाहूंगा कि वैश्विक भारतीय परिषद अफ्रीका पर परंपरागत रूप से अपना ध्यान केन्द्रित रखे और समय-समय पर ऐसे सम्मेलन आयोजित करती रहे तथा उप-क्षेत्रीय आयामों पर भी ध्यान केंद्रित करे।

एक बार फिर, मैं इस प्रयास के लिए आईसीडब्ल्यूए को बधाई देता हूं और सभी प्रतिनिधियों को शुभकामनाएं देता हूं। मुझे आशा है कि भारत और अफ्रीका के बीच संबंध दोनों क्षेत्रों में शांति और समृद्धि लाते हुए फलते-फूलते रहेंगे।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

*****